

॥ हयग्रीव संपदास्तोत्रम् ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति वादिनम् ।  
नरं मुंचंति पापानि दरिद्रमिव योषितः ॥ १ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो वदेत् ।  
तस्य निस्सरते वाणी जहनुकन्याप्रवाहवत् ॥ २ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो ध्वनिः ।  
विशोभते स वैकुण्ठकवाटोद्घाटनक्षमः ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं हयग्रीवपदांकितम् ।  
वादिराजयतिप्रोक्तं पठतां संपदां पदम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचितं हयग्रीवसंपदास्तोत्रं संपूर्णम्  
॥